प्राक्कथन

प्राक्कथन

मैंने प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध में बीसवीं सदी के अंतिम दशक के एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का शैल्पिक अध्ययन करने का प्रयत्न किया है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का शैल्पिक अध्ययन पर मेरी जानकारी के अनुसार किसी भी अनुसंधाताने अपने अनुसंधान का विषय नहीं बनाया है। लेखकद्वारा चित्रित ग्रामीण जीवन के सामान्य लोगों की कसमसाहट को मैंने इस लघुशोध - प्रबंध के द्वारा विनम्रता के साथ तलाशने का प्रयत्न किया है।

विवेच्य उपन्यास में लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने अस्मिता की तलाश में ग्रामीण जनसामान्य की चेतना को, दबानेवाली शक्ति को वाणी देना, परिवेशजन्य उभरनेवाली प्रतिकूल घटनाओं से जुझती हुअी ग्रामीणों की प्रवृत्ति को दिखाना, युगीन बिखरी हुअी विसंगतियों को प्रस्तुत करना, युगबोध और युगसत्य को अभिव्यक्त करना, मानवी जीवन की अभावग्रस्तता, बेचैनी, गरीबी, बेरोजगारी, नारी जीवन की पीड़ादायी पुकार को प्रस्तुत करना, आधुनिक युगबोध की क्रूरता को और मानवी हीनत्वबोध को उभारना, देशमें फैले भ्रष्टाचार को, सांप्रदायिक फसादों को, अत्याचारग्रस्त समाज - जीवन को, वर्ग - वैषम्य को, मानवी - मूल्यों के विघटन को मुखरित करना आदि महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रभावी काम किया है। यहाँ जीवन - संघर्ष की विद्रुपताभरी वेदना साकार हो उठी है। विवेच्य उपन्यास में ग्रामीण जीवन की पीड़ा को विस्तृत पटल पर लेखकने खड़ा करके ग्रामीण अँचलों के विद्रुपता भरे मुखड़े को यथार्थ वाणी देने का स्तुत्य कार्य किया है। शहरों, महानगरों की सांप्रदायिकता आज ग्रामीण जीवन के नस - नस में कैसे पहुँच चुकी है, इसे भी संकेत के द्वारा उभारा है। लेखकने आजादी के बाद ग्रामीण परिवेश में होनेवाले बदलावों के कारण इसमें उभरनेवाली विद्रुपताओं के नकाबों को तार - तार करने का प्रयत्न विवेच्य उपन्यास द्वारा किया है।

प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध के द्वारा हमने विवेच्य उपन्यास के शैल्पिक अध्ययन के साथ - साथ ग्रामीण जीवन में व्याप्त विघातक प्रवृत्तियों को भी तलाशने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में बाँटा है -

प्रथम अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का कथावस्तुगत अध्ययन " में उपन्यास की मुख्य कथा, उपन्यास की विभिन्न गौण कथाएँ, उपन्यास में व्यक्त कथागत बिखराव, अलग विषयों को तलाशनेवाली कथाएँ और कथागत प्रयोग आदि पर प्रकाश डालकर यह दिखाया है कि विवेच्य उपन्यास की कथा में विविध विषयों का एवं विविध प्रवृत्तियों का बिखराव करके लेखक ने ग्रामीण जनजीवन के मुखड़े की विद्रुपता भरी तस्बीर को यथार्थ के कठघरे में आबध्द किया है।

द्‌वितीय अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पात्र एवं उनके चरित्र - चित्रण का अध्ययन " में विवेच्य उपन्यास के पुरूष पात्र, नारी पात्र, गौण पात्र, पात्रों का बाहुल्य पात्रों के चरित्र - चित्रण में आधुनिकता, परिवेशानुकूल पात्र संरचना आदि का विवेचन करते हुए बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासो में

पात्रों का बाहुल्य कैसे आया है, हर पात्र अपने परिवेशानुकूल अपनी विचारधारा को कैसे प्रस्तुत करते है, इसमें हमने यह भी दिखाया है कि आज ग्रामांचलों के पात्रों में भी आधुनिक युगबोध के दर्शन होते जा रहे हैं। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किये है।

तृतीय अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के संवादों (कथोपकथन) का अध्ययन " में उपन्यास के संवादों में नई अवधारणाओं का प्रयोग, परिवेशानुकूल संवाद, आत्मकथनात्मक संवाद, प्रबोधनात्मक संवाद, पात्र परिचयात्मक संवाद, संवादों में प्रयोगशीलता आदि का विवेचन और विश्लेषण किया है। अंत में यह दिखाया है कि विवेच्य उपन्यास के संवाद प्रयोगधर्मी लगते हैं। पात्रों के परिवेशानुकूल विचार संवादों में अभिव्यक्त हुए है। ये संवाद प्रगतिवादी, मार्क्सवादी विचारों का वहन करते हैं।

चतुर्थ अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का परिवेशगत अध्ययन " के अंतर्गत प्रस्तुत उपन्यास का परिवेश, तत्कालिन बनती - बिगड़ती स्थितियों का वातावरण, स्वातंत्र्योत्तर जनसामान्य की स्थितियों का वातावरण, शोषणात्मक स्थितियाँ, उत्सर्व - पर्व एवं दुःखद पीड़ाओं का वातावरण, पात्रों का विस्थापन, ग्रामीण वातावरण, पहाडी भूभाग का वातावरण, अकालग्रस्त स्थितियों का वातावरण, हिंदू - मुस्लिम संघर्ष का वातावरण, धर्मांतरण का वातावरण आदि पर प्रकाश डालकर अंत में यह दिखाया है कि लेखक ने कालगत बदलाव और युगबदलाव के साथ परिवेशजन्य स्थिति को उभारने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। विवेच्य उपन्यास के परिवेश एवं वातावरण के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण जीवन की यथार्थ छबी को और गाँव जीवन के विद्रुप मुखड़े को यथार्थरूप में चित्रित कर दिया हैं।

पंचम अध्याय :- " 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की भाषा, शैली एवं उद्देश्य का अध्ययन " में भाषाशिल्प के अंतर्गत ग्रामीण बोलचाल की भाषा, परिनिष्ठित भाषा, चित्रात्मक भाषा, लोकगीतात्मक भाषा, बुंदेलखंडी भाषा, उर्दू - अरबी - फारसी शब्दों का प्रयोग, अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग, मुँहावरें, कहावतें, एवं सुक्तियों का प्रयोग, भाषा में प्रयुक्त पुराने संदर्भों में आधुनिक युगबोध का प्रयोग आदि भाषा - विषयक तथ्यों की तलाश की है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्राप्त संवादशैली, स्वगतशैली, पूर्वदीप्तिशैली, स्वप्नशैली, काव्यात्मक शैली, कथात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि पर प्रकाश डाला है।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास का उद्देश्य ग्रामीण जनजीवन की स्थिति का चित्रण करना, पहाडी जनजीवन की स्थिति का चित्रण करना, ग्रामीण जीवन में व्याप्त सांप्रदायिकता का चित्रण करना, नारी - शोषण के विभिन्न आयामों को वाणी देना तथा दलित - सवर्ण संघर्ष को स्पष्ट करना आदि तथ्यों का विवेचन - विश्लेषण किया है अंत में निष्कर्ष के रूप में यह स्पष्ट किया है कि उपन्यास की भाषा में ग्रामीण बोलचाल की भाषा का चित्रण करके लेखक ने ग्रामीण आँचलिकता को उभारा है। और यथार्थ ग्रामीण भूभाग की तस्बीर चित्ररूप में पाठकों के सामने रखी है। विवेच्य उपन्यास में बुंदेलखंडी भाषा का प्रयोग उपन्यास में जान भर देता

है। अनेक जगहों पर उपन्यास की भाषा मिश्रित हिन्दी का परिवेशानुकूल रूप प्रस्तुत करती है। मुहावरें, कहावतें, सुक्तियाँ तथा पुराने संदर्भों ने उपन्यास की भाषा में जान भरकर आधुनिक युगबोध की ओर संकेत किया है।

शैली के माध्यम से लेखक ने अपनी प्रयोगशीलता का यथार्थ परिचय दिया है। उद्‌देश्य की दृष्टी से लेखक ने अपने मन में स्थित विचारों को ग्रामीण जनजीवन के पटल पर प्रवाहित करने का यथार्थ प्रयत्न किया है। पहाडी और ग्रामीण जनजीवन में पनपनेवाली विकृतीयों को उभारने के उद्‌देश्य में लेखक को पूर्ण सफलता प्राप्त हो चुकी है।

अंत में 'उपसंहार' दिया है, जिसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्‌धति से निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिए हैं। इसके उपरांत आधार - ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गई है।

प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध की मौलिकता :-

1. अब्दुल बिस्मिल्लाहजी के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास की शैल्पिकता को अध्ययन का केंद्र मानकर स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही इस उपन्यास पर अनुसंधान संपन्न हुआ है। इस उपन्यास में कथागत बिखराव के साथ कथागत प्रयोगों के दर्शन होते हैं, जो लेखक की प्रयोगधर्मिता को स्पष्ट करते है।
2. प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध में 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में चित्रित पात्रों का समग्र लेखा - जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के सभी पात्रों की रचना परिवेशानुकूल है।
3. अब्दुल बिस्मिल्लाहजीने 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में ग्रामजीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सांस्कृतिक, पारिवारिक स्थितियों के तथा विभिन्न समस्याओं के बदलते स्वरूप के यथार्थ दर्शन कराए है।
4. प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध में लेखकद्‌वारा चित्रित कराये गये ग्रामजीवन में स्थित निम्नवर्ग के साथ - साथ भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था, ग्रामीण नारी - जीवन, कुप्रथाएँ आदि पर प्रकाश डाला गया है।
5. प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध में ग्रामीण दलित - सवर्ण संघर्ष के कारण उत्पन्न विभिन्न सामाजिक समस्यों को उद्‌घाटित किया है।
6. प्रस्तुत लघुशोध - प्रबंध में लेखकद्वारा चित्रित हिन्दुस्तान के गाँव - जीवन की स्थिति और गति को सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया है।